Volume : 5 | Issue : 3 | March 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

Research Paper

Population Growth And Environmental Degradation In District Ghazipur (U.P.)

जनपद गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)में जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण अवनयन

Geography

KEYWORDS : Population growth, Environmental degradation, Effect on Environment

Mohd. Swaleh Ansari — Research Scholar, Department of Geography, HNB Garhwal University Srinagar (Uttarakhand)

Dr. M.S. Negi — Associate professor, Department of Geography, HNB Garhwal University Srinagar (Uttarakhand)

ABSTRACT

पर्यावरण अवनयन के कारणों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि सबसे बड़ा कारण है। वास्तव में पर्यावरण अवनयन एवं पारिस्थितिकीय असन्तुलन का मूल कारण मानव जनसंख्या में वृद्धि है, क्योंकि कृषि में विस्तार, नगरीकरण, औधोगीकरण आदि बढ़ते मानव समुदाय के ही प्रतिफल है। जनपद गाजीपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जनपद है। यह 25019′ तथा 25054′ उत्तरी अक्षांश और 8304′ तथा 83058′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जनपद का क्षेत्रफल 3377 वर्ग किमी है। सन् 2011 के जनगणना के अनुसार इस जनपद की कुल जनसंख्या 3615515 है। इस शोधपत्र में द्वितीयक आँकडो का प्रयोग किया गया है। तथा आँकड़े का विश्लेषण एम.एस0एक्सेल 2007 में किया गया है। जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ा ब्मदेने व्पिकपं.2011 से लिया गया है। भारत में पर्यावरण अवनयन के कारणों में तीव्र दर से बढ़ती जनसंख्या को सर्व प्रमुख कारण समझा जाता है, क्योंकि लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण देश के सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। वास्तव में औद्योगिक विस्तार, नगरीय वृद्धि, कृषि में विस्तार एवं विकास, यातायात एवं संचार के साधनों में वृद्धि आदि जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि के ही परिणाम हैं। मानव समुदाय को भुखमरी एवं प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए आधुनिक प्रौधोगिकी का विकास करना पड़ रहा है। परिणामस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि दर की अपेक्षा प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन की दर बढ़ती जा रही है। जिस कारण कई कीमती एवं अनवीकरण वाले संसाधनों का अभाव होता जा रहा है।

प्रस्तावना **(Introduction) –** पर्यावरण अवनयन के कारणों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि सबसे बड़ा कारण है। विश्व की बढ़ती जनसंख्या हेतु सुख सुविधा जुटाने के लिए प्रकृति पर अनुदारतापूर्ण दबाव पड़ता रहा है। मनुष्य की बढ़ती जनसंख्या और उससे तेज गति से बढ़ता भौतिक सुख का मोह प्रकृति को पंगु बनाने का सबसे बड़ा कारण कहा जा सकता है। विश्व जनसंख्या की तीव्र बढ़ोत्तरी गत शताब्दी में अंकित की गई, फलतः यह सोचना सार्थक है कि इसका सीधा सम्बन्ध पर्यावरण अवनयन से है। कहा जाता है कि यदि यह बढ़ोत्तरी कायम रही तो पृथ्वी मानव के रहने लायक नहीं रह जायेगी।

वास्तव में पर्यावरण अवनयन एवं पारिस्थितिकीय असन्तुलन का मूल कारण मानव जनसंख्या में वृद्धि है क्योंकि कृषि में विस्तार, नगरीकरण, औद्योगीकरण आदि बढ़ते मानव समुदाय के ही प्रतिफल है। जनसंख्या में लगातार वृद्धि होने के कारण सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जिस कारण प्राकृतिक संसाधनों के तेजी से परन्तु धुआँधार विदोहन के कारण अनेक पर्यावरण ीय समस्यायें उत्पन्न हो रही है। भारत में पर्यावरण अवनयन के कारणों में तीव्र दर से बढ़ती जनसंख्या को सर्वप्रमुख कारण समझा जाता है, क्योंकि लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण देश की सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। वास्तव में औद्योगिक विस्तार, नगरीय वृद्धि, कृषि में विस्तार एवं विकास यातायात एवं संचार के साधनों में वृद्धि आदि जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि के ही परिणाम है। मानव समुदाय को भूखमरी एवं प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए वैज्ञानिक तकनीकों एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी का विकास करना पड़ रहा है। परिण ाम स्वरूप जनसंख्या में वृद्धि दर की अपेक्षा प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन की दर बढ़ती जा रही है। जिस कारण कई कीमती एवं अनवीकरण वाले संसाधनों का अभाव होता जा रहा है। ज्ञातव्य है कि जैसे–जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है, वैसे–वैसे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है, क्योंकि अतिरिक्त जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए अतिरिक्त खाद्यान्न, आवास एवं आवश्यकता की अन्य वस्तुओं की मांग बढ़ती जा रही है। परिणाम स्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन बढ़ता जा रहा है। जिस कारण पर्यावरण अवनयन में वृद्धि होती है।

1901 से 1991 के बीच जनसंख्या में 3.5 तथा सन् 1991 से 2001 तक पांच गुनी वृद्धि हुई है। जिस कारण भारत के प्राकृतिक संसाधनों पर चार गुना और अध िक दबाव हो गया है। परिणाम स्वरूप सकल बोये गये क्षेत्र को 118.75 मिलियन हेक्टेअर (1950–51) से बढ़कर 142.81 मिलियन हेक्टेअर करना पड़ा। ज्ञातव्य है कि क्षेत्र में यह विस्तार वन क्षेत्र में ह्रास करके ही किया गया।

अध्ययन क्षेत्र **(The Study area) –** गाजीपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जनपद है। यह 25019′ से 25054′ उत्तरी अक्षांश और 8304′ से 83058′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर पूर्व में बलिया जनपद उत्तर–पश्चिम में मऊ, आज़मगढ़, पश्चिम में जौनपुर जनपद, दक्षिण–पश्चिम में वाराणसी तथा चन्दौली जनपद और दक्षिण–पूर्व में बिहार राज्य स्थित है। इस जनपद को गंगा और कर्मनाशा बिहार राज्य से छोटी सरयू (टौंस) मऊ और बलिया से गंगा वाराण ासी से और गोमती जौनपुर से पृथक करती है। गाजीपुर जनपद पूर्व–पश्चिम लम्बा तथा उत्तर–दक्षिण चौड़ा है। इसकी लम्बाई 90 किमी0 तथा चौड़ाई 64 किमी0 है। इस जनपद की समुद्र तल से ऊँचाई 67.5 मीटर है। इस जनपद का क्षेत्रफल 3377 वर्ग किमी0 है। सन् 2011 के जनगणना के अनुसार इस जनपद की कुल जनसंख्या 3615515 है। इस जनपद में 16 विकासखण्ड (सदर, सैदपुर, देवकली, बिरनों, मरदह, रेवतीपुर, मनिहारी, जखनियां, करण्डा, कासिमाबाद, बाराचवर, मोहम्मदाबाद भाँवरकोल, जमानियां, रेवतीपुर, तथा भदौरा) है। इस जनपद में तीन नगर पालिका (गाजीपुर, मोहम्मदाबाद तथा जमानियां) तथा पाँच नगर पंचायत (बहादुरगंज, सैदपुर, जंगीपुर, दिलदारनगर, तथा सादात) है। इस जनपद में 193 न्याय पंचायत, 1050 ग्राम सभा तथा 3364 ग्राम है। इस जनपद में पाँच तहसीलें (जखनियां, सैदपुर, सदर गाजीपुर, मोहम्मदाबाद तथा जमानियां) है।

शोध विधितन्त्र **(Research Methodology) –** भौगोलिक अध्ययन हेतु विद्व ानों एवं भूगोलवेत्ताओं ने अनेक शोध विधियों का प्रयोग किया है। अध्ययन का आध ार सूक्ष्म एवं व्यापक दोनों ही स्तर पर निर्धारित किया जाता है। कभी जनपद स्तर को तो कभी विकासखण्ड स्तर तो कभी ग्राम स्तर को अध्ययन का इकाई मानक शोध कार्य किया जाता है। किसी भी शोध विषय में समुचित अध्ययन के लिए सम्बन्धित क्षेत्र से आँकड़ों का एकत्रीकरण करने के लिए सर्वेक्षण आपेक्षित है। इस शोध पत्र में द्वितीयक आँकड़ो का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ा अर्थ एवं संख्या प्रभाग गाजीपुर से लिया गया है। आँकड़ों को स्पष्ट करने के लिए तालिका तथा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। ग्राफ सम्बन्धी कार्य एम0एस0 सक्सेल–2007 में किया गया है।

तालिका – 1 – जनपद गाजीपुर में जनसंख्या तथा जनसंख्या वृद्धि, 1901–2011

वर्ष	कुल जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत में
1901	858090	&
1911	788537	& 8
1921	781570	& 1
1931	824971	6-0
1941	985380	19-0
1951	1141278	16-0
1961	1321578	16-0
1971	1531654	16-0
1981	1944669	27-0
1991	2416617	24-0
2001	3037582	25-7
2011	3615515	19-0

स्रोत–अर्थ एवं संख्या प्रभाग गाजीपुर

तालिका–1– से स्पष्ट है कि जनपद की कुल जनसंख्या सन् 1901 में 858090 थी। सन् 1921 में घटकर 781570 हो गयी। 1921 के बाद से जनपद की जनसंख्या में लगातार वृद्धि होती गयी। वर्तमान में जनपद की कुल जनसंख्या 3615515 है। जो 2001 के तुलना में 19: की वृद्धि हुई है।

Volume : 5 | Issue : 3 | March 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

तालिका–II- जनपद गाजीपुर की विकासखण्ड ग्रामीण जनसंख्या की प्रति 10 वर्ष की जनसंख्या वृद्धि, 2011

क्र0सं0	विकासखण्ड	कुल ग्रामीण जनसंख्या	गत दशक में प्रतिशत वृद्धि
1	जखनियां	221776	19-03
2	मनिहारी	217046	17-21
3	सादात	213766	16-76
4	सैदपुर	235540	12-53
5	देवकली	226207	17-66
6	बिरनो	166598	23-61
7	मरदह	186435	18-57
8	गाजीपुर (सदर)	210159	22-36
9	करन्डा	144106	16-92
10	कासिमाबाद	239768	20-07
11	बाराचवर	204173	25-66
12	मोहम्मदाबाद	221471	18-35
13	भॉवरकोल	191085	16-96
14	जमानियां	261124	24-93
15	रेवतीपुर	178354	17-69
16	भदौरा	223547	19-04
	योग ग्रामीण	3341155	19-15

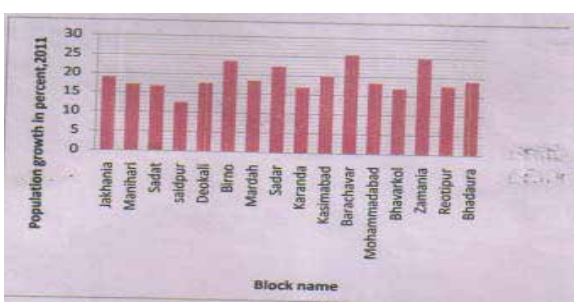

तालिका–II से स्पष्ट है कि जखनियां विकासखण्ड में सन् 2011 के जनगणना के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि दर जखनियां विकासखण्ड में 19.03 प्रतिशत मनिहारी विकासखण्ड में 17.21 प्रतिशत, सादात विकासखण्ड में 16.76 प्रतिशत, सैदपुर विकासखण्ड में 12.53 प्रतिशत, देवकली विकासखण्ड में 17.66 प्रतिशत, बिरनो विकासखण्ड में 23.61 प्रतिशत, मरदह विकासखण्ड में 18.57 प्रतिशत, सदर विकासखण्ड में 22.36 प्रतिशत, करन्डा विकासखण्ड में 16.92 प्रतिशत, कासिमाबाद विकासखण्ड में 20.07 प्रतिशत, बाराचवर विकासखण्ड में 25.66 प्रतिशत, मोहम्मदाबाद विकासखण्ड में 18.35 प्रतिशत, भॉवरकोल विकासखण्ड में 16.96 प्रतिशत, जमानियां विकासखण्ड में 24.93 प्रतिशत, रेवतीपुर विकासखण्ड में 17. 69 प्रतिशत तथा भदौरा विकास खण्ड में 19.04 प्रतिशत गत दशक की तुलना में जनसंख्या वृद्धि हुई है। सबसे कम ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि सैदपुर विकासखण्ड में तथा सबसे अधिक बाराचवर विकासखण्ड में हुई है। सम्पूर्ण जनपद गाजीपुर का कुल ग्रामीण

जनसंख्या वृद्धि 19.15 है।

जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव **(Impact of Population growth on Environment)**

धरातल पर मानव सबसे महत्वपूर्ण प्राणी है। भौगोलिक अध्ययन में मानव का स्थान केन्द्रीय है। यही प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का उपयोग करता है। और उसे अपनी उपस्थिति से प्रभावित करता है। यद्यपि पृथ्वी की सतह पर मानव का आगमन पृथ्वी के कुल भू–वैज्ञानिक इतिहास ही नहीं बल्कि जैव विकास के काल की दृष्टि से भी अत्यन्त नवीन है, अर्थात् भूतल पर प्रारम्भिक जैव समुदाय का विकास सम्भवतः आज से 50 से 55 करोड़ वर्ष पूर्व हो चूका था। वहीं मानव का विकास अर्थात् मस्तिष्क–युक्त मनुष्य नामक प्राणी भी कहते हैं कि उत्पत्ति वनमानुष के पश्चात् सम्भवतः 10 से 15 लाख वर्ष पूर्व हुई होगी।

निर्धन देश अपनी असमर्थता के कारण संसाधनों का दोहन असन्तुलित ढंग से करते हैं, जिसका कुप्रभाव वहाँ के पर्यावरण पर पड़ता है। इन देशों में बढ़ती जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के लिए विकसित देशों के निर्देश पर संसाधन का दोहन करना पड़ता है। जनपद गाजीपुर अपनी आर्थिक कठिनाई के कारण वन विनाश के लिये बाध्य है। और इसका पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

अज्ञानता और प्रकृति के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार भी पर्यावरण अवनयन का एक प्रमुख कारण है। पिछड़े देशों की विशाल जनसंख्या प्रकृति की शत्रु बन गयी।

आदिवासी समाज अज्ञानता के कारण वन विनाश परिवर्तनशील कृषि के लिए करता है। खान से खनिज निकालने वाला श्रमिक धरातल और वनस्पतियों को विनष्ट करता है, पशुपालन पशुओं द्वारा अधिक चराई कर पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने में पीछे नहीं हैं। विकसित समाज में प्रकृति के प्रति उदासीनता इतनी बढ़ गई है कि आकाश मे आणविक परीक्षण से वायुमण्डल को प्रदूषित कर रहें हैं। समुद्री जल में खनिज तेल, कचरा और अन्य प्रदूषक सामग्री डालकर विकसित देश समुद्री जीवों का विनाश कर रहें हैं। जंगल का विनाश करते समय नहीं सोच पाते कि पेड़ जीवन संचार के लिए आधारी घटक है। अनेक देशों में पर्यटन के नाम पर पर्यावरण का ह्रास किया जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के कारण अधिक मात्रा में वनों का विनाश करके वनों का कृषि योग्य भूमि तथा आवास बनाने के लिए सदैव दोहन किया जा रहा है जिससे यहाँ के पर्यावरण में अवनयन होता जा रहा है। पर्यावरण अवनयन होनें से यहाँ के लोंगों के बहुत से असुविध ाओं का सामना करना पड़ रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण बेरोजगारी को भी बढ़ावा मिल रहा है। वनस्पतियों का दोहन कर के सड़कों का निर्माण किया जा रहा है जिससे पर्यावरण अवनयन में वृद्धि होती जा रही है।

(1)जनसंख्या वृद्धि का वनों पर प्रभाव– जनपद गाजीपुर में जनसंख्या वृद्धि का वनों पर बहुत ही व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण ही वनों का अत्याधिक मात्रा में दोहन हो रहा है। सन 2003–04 में जनपद में 4348 हेक्टेयर भूमि पर वन थे जो 2014–15 में घटकर मात्र 121 हेक्टेयर शेष हैं। वनों की मात्रामें इतनी तीव्र गति से गिरावट जनसंख्या वृद्धि होने के कारण हुआ है,क्योंकि वन भूमि के अधिकांश भाग को कृषि योग्य बनाया गया है।

(2) सड़क निर्माण का पर्यावरण पर प्रभाव – आधुनिक समय में स्थल यातायात की मुख्य माध्यम सड़के हैं। खेत एवं खलिहानों से कारखानों तक विनिर्मित माल बाजारों तथा उपभोक्ता के द्वार तक सड़क द्वारा पहुँचाया जाता है। जनपद में सन् 2001–02 में पक्की सड़कों की लम्बाई 3032 किमी0 थी। 2006–2007 में 3703 किमी0 तथा 2013–14 में बढ़कर 5531 किमी0 हो गयी है। इस प्रकार निरन्तर सड़कों की लम्बाई में वृद्धि हो रही है। ये सत्य है कि पक्की सड़कों का निर्माण वनों का विनाश करके किया गया है। वनों का विनाश होने से पर्यावरण अवनयन में वृद्धि होती जा रही है।

(3) वाहनों के वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव– वाहनों के वृद्धि का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि है। जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ वाहनों की संख्या में भी वृद्धि होती जा रही है। जनपद में सन् 2001 में दो पहिया वाहन 28131 तथा कार, जीप, वैनों की संख्या 6024 थी, जो लगभग तीन गुने वृद्धि के साथ सन् 2011 में दो पहिया वाहन 78218 तथा कार, जीप, वैन 21169 हो गयी। वाहनों की संख्या में वृद्धि के कारण ही वायु प्रदूषण को बढ़ावा मिल रहा है।

(4) मकानों के विकास का पर्यावरण पर प्रभाव– मकान के विकास का भी मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि है। जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ मकानों की संख्या में भी तीव्र गति से वृद्धि होती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ मकानों की संख्या में भी तीव्र गति से वृद्धि होती जा रही है। जनपद में सन् 1971 में मकानों की संख्या 209036, सन् 1991 में 341149 थी। इस प्रकार निरन्तर मकानों की संख्या में वृद्धि होने के कारण मकानों की संख्या 2011 में 499162 हो गयी। जितने ही तेजी के साथ जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है। उतनी ही तेजी के साथ वनस्पतियों का दोहन करके मकानों का निर्माण किया जा रहा है। जिस कारण पर्यावरण अवनयन को बढ़ावा मिल रहा है।

निष्कर्ष ;ब्वदबसनेपवदद्ध . भूपटल पर मानव एवं पर्यावरणीय वातावरण का सन्तुलित सहसम्बन्ध आदिकाल से रहा है। किन्तु अत्यधिक बढ़ी हुई जनसंख्या तथा उसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु औद्योगिक क्रान्ति की द्वन्द्व से भी सदियों से चले आ रहे हैं, तथा आदर्श वातावरण सम्बन्धों में असन्तुलन की स्थिति पैदा कर दी जिससे विभिन्न पर्यावरण परिवर्तन होने लगे हैं।

जनसंख्या एवं कृषि विकास में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। कृषि विकास का जनसंख्या से जन्म से लेकर मृत्यु तक सहसम्बन्ध पाया जाता है। बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव सीधे कृषि उत्पादन एवं विकास पर परिलक्षित होता है। जनपद गाजीपुर में जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ रही है। जिससे यहाँ का पर्यावरण अत्यधिक प्रभावित हो रहा है। इस जनपद के विकासखण्ड बाराचवर में जनसंख्या वृद्धि सबसे अधिक अर्थात् 25.66 प्रतिशत है। जनपद गाजीपुर में तीव्र जनसंख्या वृद्धि की देन है कि वनों को काटकर कृषि तथा आवास योग्य बनाया गया है। आज इस जनपद में जनसंख्या वृद्धि की देन है कि बेरोजगारी तथा गरीबी दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। इस जनपद में सन् 1901 में जनसंख्या 858090, 1951 में, 1141278 तथा बढ़कर सन् 2011 में 3615515 हो गयी है। इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि जनपद गाजीपुर में जनसंख्या कितनी तेजी के साथ बढ़ रही है। तथा इसका पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

इस गति से यदि जनसंख्या में वृद्धि होती गयी तो यहाँ के पर्यावरण अवनयन में वृद्धि होती जायेगी। जिससे यहाँ रहने वाले या पाये जाने वाले जीवधारियों को अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। जनपद में सड़कों व मकानों विकास के कारण भी पर्यावरण अवनयन में वृद्धि होती जा रही है।

Reference –

1. **Mamoria, c and sisaudia, M.S. (2010) : Environment and development**
2. **Rav, B.P. and Shrivastava, V.K. (2013-14) : Environment and Ecology**
3. **Chandana, R.C. (1980) : Introduction to population geography, Kalyani publication New Delhi.**
4. **Clarke, J.I. (1965) : Population geography, Pergamon press, oxford.**
5. **Census of India (2011) : District primary census abstract of total population 2011, U.P.**
6. **Directorate of census operations.**
7. **Singh, S (2008) : Paryavaram bhoogol prayag pustak Bhawan Allahabad**